वर्ष - 2 अंक - 8

धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)
संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

अरिहंत

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

हमारे आराध्य नवदेव

नवदेवताओं के परिचय क्रम में आप अब तक 7 देवों का परिचय प्राप्त कर चुके हैं। इस अंक में पढ़िये

जिनवाणी

साधु

जिनबिम्ब

जिनधर्म

जिनवाणी

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु द्वारा समवशरण में दिव्यध्वनि खिरती है। दिव्यध्वनि में आये हुये धर्म और तत्व के उपदेश को सुनकर आचार्यों द्वारा अनेक ग्रंथ लिखे गये। इन ग्रंथों को पढ़कर अनेक मुनिराजों, ज्ञानियों और विद्वानों ने उसकी व्याख्या की। इन ग्रंथों को ही जिनवाणी कहा जाता है। जिनवाणी को प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग और करणानुयोग के माध्यम से कहा गया है। विशेष बात यह है कि जिनवाणी में वस्तु के सत्य स्वरूप का वर्णन होता है। इसमें कही हुई प्रत्येक बात का उद्देश्य वीतरागता की पुष्टि करना और मोक्षमार्ग की प्रेरणा देना है।

हमें जिनवाणी की विनय और अध्ययन करना चाहिये।

कैसा त्यौहार

एक दिवस बोले सब प्राणी
अपने साथी संग से
घर से बाहर नहीं निकलना
बचना चाहो मौत से
खटमल, मच्छर, मक्खी कांपे
गाय, बैल, पशु भैंस भी,
कीड़े थर –थर कांप रहे थे
भाग रहे थे सांप भी
कॉकरोच तो रोता फिरता
करे विनय भगवान से
मुझे बचा लो दयानाथ जी
मुझे प्रेम है प्राण से
चेतन भैया पूछे उससे
कहो आज क्या बात है
क्या कोई प्रलय आ गया
या आया यमराज है
कॉकरोच यूं रोता बोला –
चेतन भैया क्या बतलाऊँ
सर पर मौत सवार है
वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव
दीवाली त्यौहार है
कॉकरोच तू नहीं जानता
यह तो पर्व महान है
जियो जीने दो कहने वाले
महावीर भगवान हैं

सत्य अहिंसा के उद्घोषक
का निर्वाण महान है
निर्भय होकर रहो जगत में
तू इससे अनजान है।
काकरोच बोला यूं रोते
नहीं समझते बात यही तो
महावीर की जय जय कहते
फटाखे कितने फोड़ते
फटाखे के जलने से
या उसकी आवाज से
जल जाते या मर जाते हम
भाग रहे यमराज से
हम निर्दोष हैं छोटे प्राणी
जीने का अधिकार है
प्राण नहीं दे सकते तो
मारने का क्या अधिकार है
जल जाओ अग्नि से थोडा भी
दुख कितना तुम पाते हो
हम प्राणी का नहीं मूल्य जो
हमको यूं ही जलाते हो
ध्यान रहे ये बात मेरी सुन
जो तुम फटाखे जलाओगे
काल अनंत तक रोना तुम भी
सुखी कभी न हो पाओगे।

– विराग शास्त्री, जबलपुर

जंगल में दशलक्षण पर्व

चूं चूं करती चिड़िया आई, मंगल ये संदेशा लाई,
दशलक्षण शुभ पर्व है आया, तैयारी सब कर लो भाई,
जिन मंदिर की करो सफाई, तो हाथी ने सूंड हिलाई,
चूं चूं करती चिड़िया आई, मंगल ये संदेशा लाई ।।
गाय मौसी द्रव्य सजाये, बंदर मामा माइक लगायें ।
कोयल ने पूजन अब गाई, कौए से ढोलक बजवाई ।
चूं चूं करती चिड़िया आई, मंगल ये संदेशा लाई ।
पंडित हिरन भाई पधारे, दशलक्षण का मर्म बताये,
जिनवाणी सबको सुखदाई, बात समझ में सबके आई
चूं चूं करती चिड़िया आई, मंगल ये संदेशा लाई ।
शेर सिंह ने हुकम बजाया, सभी जानवरों को बुलवाया
भक्ति की सरगम बजवाई, सभी जानवर झूमे भाई
चूं चूं करती चिड़िया आई, मंगल ये संदेशा लाई ।

सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में प्रसिद्ध कहानियों में प्रथम दो अंगों की कहानियों को आप पूर्व में पढ चुके हैं। इस अंक में पढिये
तीसरे निर्विचिकित्सा अंग (ग्लानि नहीं करना)में प्रसिद्ध कहानी–

विनय

कच्छ देश के राजा उद्दायन राज्य करते थे। वे आत्मज्ञानी, जिनभक्त और न्यायप्रिय राजा थे। उनकी रानी का नाम प्रभावती था। वे धर्मात्मा, शीलवती, दान, व्रत, स्वाध्याय करने वाली थीं। एक दिन सौधर्म इन्द्र ने अपनी धर्मसभा में निर्विचिकित्सा अंग के पालक राजा उद्दायन की बहुत प्रशंसा की। सौधर्म इन्द्र के मुख से राजा उद्दायन की प्रशंसा सुनकर वासव नाम का देव स्वर्ग से राजा की परीक्षा करने आया। वह देव अपनी विक्रिया शक्ति से कोढ़ी मुनि का वेष बनाकर आहार के लिये राजा उद्दायन के महल में गया। कोढ़ की बीमारी के कारण उसका सारा शरीर गल रहा था, मक्खियाँ शरीर पर आ रहीं थीं, भयंकर वेदना हो रही थी। ऐसी हालत होने पर भी वह आहार के लिये राजा के महल के राजद्वार पर पहुँचा। राजा ने उसको देखा तो तुरन्त उठकर आये और अत्यंत भक्तिपूर्वक मुनिराज को पड़गाहन करके आहार कराने लगे। आहार के तुरन्त बाद उन मुनि ने अपनी माया से दुर्गन्धित वमन (वोम्बीडिंग) कर दिया। उसकी गंदी दुर्गन्ध से समीप खडे समस्त लोग भाग गये परन्तु राजा और रानी मुनि की सेवा के लिये वहीं खड़े रहे। रानी जैसे जल देने के लिये आगे बढी तो मुनि ने फिर से रानी पर महादुर्गन्धित वमन कर दी। राजा और रानी ने इसकी परवाह न कर उल्टे स्वयं पश्चाताप करने लगे कि

हे भगवान ! न जाने भोजन में हमने भूलवश क्या दे दिया जिससे मुनिवर को इतना कष्ट हो रहा है। हम बड़े पापी हैं तभी तो ऐसे उत्तम पात्र को हमारे यहाँ आहार नहीं हो पाया। इस प्रकार अपनी निन्दा करते हुये राजा ने मुनि का शरीर साफ किया। उनकी इस प्रकार की ग्लानि रहित भक्ति देखकर देव अपनी माया समाप्त कर मुनिवेष त्यागकर देव के रूप में आकर बोला – हे राजन ! निर्विचिकित्सा अंग के पालन में आपकी प्रशंसा स्वयं सौधर्म इन्द्र ने की थी। आप सचमुच में महादानी और आत्मज्ञानी हैं। आप धन्य हैं। इस पृथ्वी पर आपके समान धर्मात्मा जीव शायद ही कहीं मिलेगा। इस प्रकार प्रशंसा करके देव चला गया।

राजा पहले की तरह सुखपूर्वक राज्य करते हुये धार्मिक कार्यों में अपना समय बिताने लगे। एक दिन वे अपने महल में बैठे हुये प्रकृति के सुन्दर दृश्य देख रहे थे। तभी एक बड़ा बादल का टुकड़ा उनकी आंखों के सामने निकला। थोडी देर बाद वह बादल टुकड़ा हवा में विलीन हो गया। क्षण मात्र में उस बादल के टुकड़े को नष्ट हुआ देखकर राजा उद्दायन को वैराग्य हो गया। उन्होंने तुरन्त अपने पुत्र को बुलाकर उसको राजपाट सौंप दिया और भगवान महावीर के समवशरण में पहुँचकर मुनिदीक्षा ग्रहण कर ली। तप करके चार घातिया कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान प्राप्त किया और अन्त में समस्त कर्मों का क्षय कर सिद्ध अवस्था प्राप्त की। रानी प्रभावती ने आर्यिका व्रत अंगीकार कर तप किया और समाधिमरणपूर्वक ब्रह्मम स्वर्ग में देव पद प्राप्त किया।

संकलन – प्रसन्न शास्त्री, नागपुर

जिन्हें जिन मंदिर दूर लगता है, उन्हें अपना नरक पास समझना चाहिये।

कविता

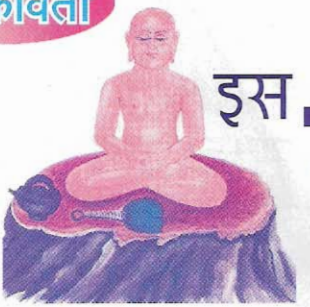

इस जनम में नहीं मिले

इस जनम में नहीं मिले पर भव में मिलता है।
अपनी करनी का फल सबको मिलता है।।

एक फूल वो है जो माथे पर सजता है
एक फूल वो है जो अर्थी पर चढ़ता है
फूल दोनों एक ही उपवन में खिलते हैं
अपनी करनी का फल सबको मिलता है।।1।।
इस जनम में .....।।

एक पत्थर वो है जिसकी मूरत बनती है
एक पत्थर वो है जो सडकों पर बिछता है
पत्थर दोनों एक ही खान से निकले हैं
अपनी करनी का फल सबको मिलता है।।2।।
इस जनम में .....।।

एक भाई वो है जो भोगों में रमता है
एक भाई वो है जो मुनिराज बनता है
भाई दोनों एक ही माता से जन्मे हैं
अपनी करनी का फल सबको मिलता है।।3।।
इस जनम में .....।।

निशंक जैन सिंगोछी

हमारे मुनिराज

1. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आम के वृक्ष का सूखा तना देखकर वैराग्य हो गया था ?
उत्तर– द्वीपायन मुनिराज को।
2. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें शौरीपुर में केवलज्ञान हुआ था ?
उत्तर– श्री अलस कुमार मुनिराज।
3. वे कौन से मुनिराज थे जिन्होंने राजा भोज की सभा में सैकड़ों विद्वानों को परास्त कर दिया था ?
उत्तर– श्री शान्तिसेन महाराज।
4. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें आचार्य मानतुंग ने अपना आचार्य पद सौंपा था ?
उत्तर– श्री गुणाकर महाराज।
5. वे कौन से मुनिराज थे जिनके गले में 4 दिन तक मरा हुआ सर्प पड़ा रहा ?
उत्तर– मुनि यशोधर
6. वे कौन से मुनिराज थे जिनका सीता ने पूर्व भव में अपमान किया था ?
उत्तर– श्री सुदर्शन मुनि।
7. वे कौन से मुनिराज थे जिन पर 7 दिन तक उपसर्ग हुआ था ?
उत्तर– मुनि पार्श्वनाथ।
8. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान नेमिनाथ प्रथम दर्शन करके वैराग्य हो गया था ?
उत्तर– श्री गजकुमार मुनिराज।
9. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे अंजन चोर ने मुनि दीक्षा ली थी ?
उत्तर– श्री देवर्षि मुनिराज।
10. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें भगवान आदिनाथ के प्रथम उपदेश से वैराग्य हो था ?
उत्तर– श्री वृषभसेन मुनिराज।
11. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश से पटना का राजा धात्रीवाहन मुनिराज बन गया ?
उत्तर– श्री शिवभूषण मुनिराज।
12. वे कौन से मुनिराज थे जिनसे दुःशासन ने दीक्षा ली थी ?
उत्तर– विदुर मुनिराज।
13. वे कौन से मुनिराज थे जो गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) से मोक्ष पधारे ?
उत्तर– सुप्रतिष्ठ केवली।
13. वे कौन से मुनिराज थे जिनके उपदेश सुनकर चाणक्य को वैराग्य हो गया ?
उत्तर– श्री महीधर मुनिराज।
14. वे कौन से मुनिराज हैं जो पंचम काल के अंत में मुनिराज होंगे ?
उत्तर– श्री वीरांगज मुनिराजजी।
15. वे कौन से मुनिराज थे जिन्हें अपनी मृत्यु के आठ दिन पहले वैराग्य हो गया था ?
उत्तर– श्री चिलाल मुनिराज।

संकलन – पं. श्रेयांस शास्त्री, जबलपुर

अब नहीं पहनूंगा

- अरे पारस ! तुमने गले में क्या पहन लिया ?
- भैया ! ये भगवान पार्श्वनाथ की फोटो वाला लॉकिट है।
- और ये हाथ में क्या पहना है ?
- अरे ये णमोकार मंत्र का कड़ा है । मैं मम्मी के साथ महावीरजी गया था ना। वहीं से लेकर आया हूँ।
- इसे पहनने से क्या होगा ?
- इसको पहनने से मन शांत रहेगा और मन में बुरे विचार नहींआयेंगे।
- अच्छा ! ये बताओ जो ये कड़ा और लॉकिट आदि नहीं पहनते उनका मन अशांत रहता होगा और हमेशा गंदे विचार रहते होंगे।
- नहीं तो ऐसा कैसे हो सकता है ?
- और तुम ये भी बताओ कि ये सब पहनने के पहले तुम्हारा मन अशांत रहता था और हमेशा गंदे विचार रहते थे !
- नहीं ऐसा नहीं।
- तो तुमने कैसे मान लिया कि इन चीजों के पहनने से ऐसा होता है ?

– वो भैया ! बहुत लोग पहनते हैं इसलिये पहन लिया।

– अच्छा ! बहुत लोग गंदे काम भी करते हैं तो हम भी वो करेंगे !

– नहीं।

– दूसरी बात– क्या तुम अपने भगवान और णमोकार मंत्र अपमान करना चाहोगे ?

– नहीं भैया ! मुझे नरक जाना है क्या ? णमोकार मंत्र के अपमान से सुभौम चक्रवर्ती को नरक जाना पड़ा था। लेकिन आप ये सब क्यों पूछ रहे हैं ? क्या मैं अपने भगवान का अपमान कर रहा हूँ ?

– हाँ ! तुमने ये णमोकार मंत्र का कड़ा और पार्श्वनाथ का लॉकिट पहना है। तुम इसे पहने हुये बाथरूम–लेट्रिन जाते हो और पसीने भरे या गंदे हाथों से इसे छूते होगे और पिक्चर भी देखते होगे ! मैं सच कह रहा हूँ ना !

– हाँ भैया !

– तो क्या इससे अपने भगवान का अपमान नहीं होता होगा ?

– भैया ! मैंने तो यह सोचा ही नहीं।

– और पारस ! मन के अच्छे विचार और शांत मन तो हमारी अच्छी सोच पर डिपेन्ड है। हम अच्छी पुस्तकें पढेंगे, मंदिर – पाठशाला जायेंगे तो हमारे विचार हमेशा अच्छे रहेंगे।

– वाह भैया ! आपने तो अच्छी तरह समझा दिया। अब मैं कभी ये नहीं पहनूंगा और अपने दोस्तों को भी समझाऊंगा ।

– विराग जैन, जबलपुर

माँ बाप का उपकार

- बचपन में जिस माँ–बाप ने हमें पाला, उनके बुढ़ापे में यदि तुमने उनको नहीं संभाला, तो तुम्हारे भाग्य में ऐसी ज्वाला भड़केगी जो तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेगी।
- दो किलो वजन उठाने में तुम्हारे हाथ दर्द करते हैं, तो माँ को सताने से पहले सोचो कि उसने तुम्हें ९ माह पेट में कैसे रखा होगा ?
- बचपन में तेरे माँ–बाप तुझे अंगुली पकड़कर तुझे स्कूल ले जाते थे, उनके बुढ़ापे में उनका सहारा बनकर उन्हें जिनमंदिर अवश्य ले जाना।
- बेटे के जन्म पर माँ–बाप ने मिठाईयाँ बांटी थीं और बेटे ने उनको ही बांट दिया।
- बेटे कबूतर को दाना डालने और गाय को भोजन देने जा सकते हैं परंतु अपने माँ–बाप को भोजन कराने में तकलीफ होती है।
- जिस बेटे को माँ –बाप को बोलना सिखाया उन्हीं माँ–बाप को उनके बुढ़ापे में बेटे चुप रहने के लिये कहते हैं।
- अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे बेटे बुढ़ापे में तुम्हारी सेवा करें तो तुम अपने माँ – बाप की सेवा करके उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करें।
- बाहर के लोगो से हंस–हंसकर बातें करना है ओर अपने माँ – बाप से बात नहीं करता तो समझ लेना कि तुम्हारी दुर्गति निश्चित हैं।
- 25–30 वर्षों तक माता–पिता के पास रहने वाला और उनका स्नेह पाने वाला पत्नी के आते ही एक वर्ष में अलग होकर माँ–बाप को भूल जाता है।

संकलन – विपिन जैन

हमारे तीर्थ क्षेत्र-

सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पटेरा तहसील में स्थिल सिद्ध क्षेत्र कुण्डपुर अत्यंत मनोहर स्थान है। यहाँ से श्रीधर मुनिराज ने मोक्ष प्राप्त किया। यहाँ नीचे तलहटी और पहाड़ पर कुल 63 भव्य जिनमंदिर हैं। यहाँ पहाड़ पर पाँचवीं - छठवीं शताब्दी की भगवान आदिनाथ की 15 फुट ऊँची भव्य प्रतिमा विराजमान है। प्रचलित कथा के अनुसार मोहम्मद गजनवी ने विद्वेष के कारण जब इस विशाल प्रतिमा को तोड़ने के लिये छैनी लगाई तो प्रतिमा से दूध का धारा निकल पड़ी और मधुमक्खियों के समूह ने गजनवी और उसकी सेना पर हमला कर दिया जिससे उन्हें भागना पड़ा। कहते हैं कि यहाँ भगवान महावीर स्वामी का समवशरण आया था। महाराजा छत्रसाल ने इस क्षेत्र का बहुत विकास किया।

कुण्डलपुर स्थान सर्वसुविधायुक्त है। कुण्डलपुर दमोह से 38 किमी, जबलपुर से 139 किमी की दूरी पर है। दमोह रेलवे के मुख्य मार्ग पर है। कुण्डलपुर से पपौराजी 194 किमी, नैनागिर 120 किमी, द्रोणगिर 147 किमी, अतिशय क्षेत्र रहली-पटनागंज 137 किमी है।

कुण्डलपुर के फोन नम्बर - 07812-272227, 272230, 272293

आया पर्व महान

मंगलमय यह पर्व है आया, दशलक्षण इसका नाम है ।
सत्य मार्ग हमें बतलाता, आतम कहे महान है ॥
उत्तम क्षमा हमें सिखलाती, नहींकिसी पर क्रोध करो
मार्दव धर्म हमें सिखलाता, नहीं कभी भी मान करो,
आर्जव धर्म हमें सिखलाता, मायाचारी त्याग करो ।
सत्य धर्म की शिक्षा मंगल, वस्तु सत्य स्वीकार करो ।
उत्तम शौच कहे सबसे यह, नहीं लोभ का भाव धरो ।
जीवों की हिंसा को त्यागो, संयम धर्म की बात सुनो ।
इच्छाओं का दमन करो अब उत्तम तप अंगीकार करो ।
पाप कषाय के त्यागी होकर, त्याग धर्म की बात सुनो ।
आकिंचन्य कहे जगत से, परिग्रह त्यागो मुनि बनो ।
ब्रह्मचर्य की यही प्रेरणा, आतम मेंही सदा रमो ।।

संकलन-प्रशम जैन, छिंदवाड़ा

खेल के नियम

- यह निर्वाण गेम है। इसमें अधिक से अधिक चार लोग खेल सकते हैं।
- यह गेम डाइस में 1 अथवा 6 आने पर ही प्रारंभ होगा।
- खेल शुरु होने के पहले खिलाडी अपना रंग चुन लें।
- जिस खाने में जो लिखा उसके अनुसार आपकी गोटी आगे अथवा पीछे चलेगी।
- नियमों का पालन करते हुये जो सबसे पहले अहिंसा वीर के खाने में पहुँचेगा वह विजयी होगा।

वीर निर्वाण महोत्सव अर्थात् दीपावली

- अरे विदेह ! जय जिनेन्द्र। अमेरिका से कब लौटे ?
- अरे दीप तुम ! जय जिनेन्द्र। परसों ही आया हूँ।
- और सब कुशल है वहाँ है पर ?
- हाँ ! सब ठीक है। दादी माँ से मिलने की इच्छा थी। दीप एक बात पूछूं।
- हाँ हाँ ! पूछो।
- आज मार्केट में इतनी भीड़ क्यों है ?
- अरे विदेह ! तुम्हें नहीं पता और पता भी कैसे होगा तुम यहाँ पैदा ही नहीं हुये तो भारतीय संस्कृति और उसके पर्व कैसे मालूम होंगे ?
- अरे दीप ! प्रवचन ही देते रहोगे या कुछ बताओगे भी।
- विदेह ! 28 अक्टूबर दीपावली पर्व आ रहा है। सब लोग यहाँ शॉपिंग करने आये हैं। इस दिन को हम सब भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव मनायेंगे। लगभग प्रत्येक धर्म में इस दिन कोई महत्वपूर्ण घटना हुई है और वे सब इस पर्व को दीपावली के रूप में मनाते हैं।
- जरा विस्तार से समझाओ ना।
- सुनो ! 24 तीर्थंकरों की परम्परा में आज से 2606 वर्ष पूर्व अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कुण्डलपुर में

हुआ। 30 वर्ष की कुमार आयु में उन्हें संसार से वैराग्य हो गया। असाधारण आत्मसाधना करके उन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश कर अरहंत पद प्राप्त किया। तब उनकी आयु 42 वर्ष थी। 30 वर्ष तक देश के विभिन्न भागों में उनका विहार हुआ। उनका दिव्यध्वनि उपदेश सुनकर अनेक जीवों ने अपना कल्याण किया। उसके पश्चात् वे पावापुर पहुँचे और 72 वर्ष की आयु में समस्त अघातिया कर्मों का क्षयकर निर्वाण पद अर्थात् मोक्ष पद प्राप्त किया। यह दिन हिन्दी माह में कार्तिक कृष्ण अमावस्या कहा जाता है और इसी दिन को हम सब वीर निर्वाण महोत्सव के रूप में मनाते हैं। अपना नया वर्ष भी इसी दिन से प्रारंभ होता है।

- इस दिन सब क्या करेंगे ?
- प्रातःकाल जिनमंदिर में श्री महावीर पूजन होगी और निर्वाण का प्रतीक निर्वाण लाडू चढायेंगे।
- हाँ ! लड्डू तो मैंने बहुत खाये हैं।
- अरे वे लड्डू नहीं। वे तो भोग सामग्री के प्रतीक हैं । बूंदी के अथवा शक्कर के लड्डू चढ़ाना तो पाप का प्रतीक है। हम तो नारियल के गोले को ही लाडू के रूप में चढ़ाते हैं।
- और फिर क्या होगा ?
- उसके बाद प्रवचन होगा। प्रवचन में भगवान महावीर का परिचय और आत्म कल्याण के लिये उनके प्रेरक संदेशों को सुनाया जायेगा।
- वाह ! फिर तो मैं भी तुम्हारे साथ मंदिर चलूंगा।
- हाँ हाँ क्यों नहीं। ये ही तो है मंगल दीपावली। शुभ दीपावली।

– विराग शास्त्री

धर्म की रेल

आओ बच्चो खेलें खेल
एक बनायें धर्म की रेल
जीव हो इसका इंजन
दस धर्मों के डिब्बे हों।
सम्यक् दर्शन टिकट हो इसका
सम्यक् ज्ञान पटरी हो।
सम्यक् चारित्र गुरु चलाते
पहुँचा देती जल्दी है।
हम सब मिलकर बैठेंगे
मोक्षनगर को जायेंगे।
वापिस कभी न आयेंगे
वहीं पर मौज मनायेंगे।

हरपाल ए.संघवी– तेज संघवी

नीचे दी गई पहेलियों का उत्तर लिखकर भेजिये। सही पांच विजेताओं को पुरस्कार दिये जायेंगे। पांच से अधिक सही उत्तर प्राप्त होने पर पांच विजेताओं का चयन ड्रा द्वारा किया जायेगा। इन पहेलियों के उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 08 है।

1 सबको देख रहे हैं पल-पल।
उन्हें देखना सबको मुश्किल॥

2 सुख में ध्याओ दुःख में ध्याओ।
ध्याते ही शिव सुख पाओ।।

3 जग में इक महान में नारी का काम,
गूंज रहा है उसका नाम।
अपने पति को धर्म में लाया,
जिन मुनि का उपसर्ग मिटाया॥

4 जिन धर्म की हो प्रभावना, जीवन का उद्देश्य महान।
ग्रंथ लिखा और प्राण गंवाये, ऊँचा रखा धर्म का नाम॥

इन पहेलियों के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे

पिछले अंक में प्रकाशित ज्ञान पहेली के उत्तर और विजेताओं के नाम-
1- सिद्ध भगवान 2- मुनिराज 3- मुनि आदिनाथ
4- अकलंक - निकलंक 5- सीताजी

विजेता - 1. प्रशांत प्रदीप जैन, देवलाली नासिक
2. संकेत प्रदीप रोकड़े मालेगांव (श्री महावीर विद्या निकेतन नागपुर)
3. प्रशम आशीष दोशी, मेहसाणा

पुरस्कार-प्रायोजक
अनेकांत फार्मेसी
डॉ.योगेश चंद जैन
अलीगंज, जिला - एटा (उ.प्र.)

प्रेरक प्रसंग

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

एक चतुर कुत्ते ने अपनी बिरादरी के अन्य साथियों को बुलाकर उन्हें समझाया कि हम लोग आपस में एक दूसरे पर भौंककर अपनी शक्ति खराब करते रहते हैं। भौंकते रहना अच्छी बात नहीं। इसलिये हम आपस में प्रण करें कि अब आपस में नहीं भौंकेगे। कुत्तों ने उसकी बात मानकर आपस में भौंकना बन्द कर दिया। समय-समय पर वह चतुर कुत्ता उन सभी कुत्तों के लिये प्रवचन करता रहता था।

एक अन्य चालाक कुत्ते को विचार आया और उसने अपने अन्य साथियों को बुला कर कहा कि उस चतुर कुत्ते ने हम सबको भौंकना बंद करवाकर मौन दिलवा दिया और स्वयं भाषण के बहाने भौंकता रहता है।

इस तरह वह अपना शौक तो पूरा कर लेता है और हमें कोने में जाकर अकेले भौंकना पड रहा है। यह चाल सुनते ही सब कुत्तों ने मौन तोड़ दिया और मनमाने ढंग से एक दूसरे पर भौंकने लगे।

संकलन - अनुभव जैन, हटा, शुभम जैन, बुढार
श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर

शोध

एक बार अकबर की उंगली कट गई तो बीरबल ने कहा कि जो होता है अच्छे के लिये होता है। अकबर को अत्यंत क्रोध आया उसने कहा एक तो मुझे उंगली कट जाने से बहुत दर्द हो रहा है और तुम कह रह हो कि जो होता है अच्छे के लिये होता है। अकबर ने बीरबल को गिरफ्तार करवा कर जेल भिजवा दिया। एक दिन अकबर शिकार खेलने के लिये गये और शिकार खेलते-खेलते अपने साथियों से दूर निकल गये। जंगल के आदिवासियों ने उन्हें पकड़ कर अपने राजा के पास ले गये। उनका राजा बोला - वाह! आज तो शुभ मुहूर्त है। इसकी बलि (हत्या) ले लो, कुल देवता प्रसन्न होंगे। अकबर घबरा गया। तभी एक आदिवासी चिल्लाया - महाराज! हम इसकी बलि नहीं दे सकते। इसकी उंगली कटी है और हम अपने देवता को खण्डित अंग वाले व्यक्ति की बलि नहीं देते, अकबर को छोड़ दिया गया। अकबर ने दरबार में वापस आकर बीरबल को बुलाया और सभी को जंगल की घटना सुनाई और कहा कि बीरबल! तुमने सच कहा था - जो होता है अच्छे के लिये होता है। यदि मेरी उंगली न कटी होती तो मेरी तो हत्या हो जाती तो बीरबल ने कहा हाँ महाराज! यदि मैं जेल में न होता तो निश्चित ही आपके साथ जाता। आप तो बच जाते परन्तु मैं मारा जाता।

हमें हर परिस्थिति में अपना हित देखना चाहिये।

आभास जैन, जबलपुर कक्षा - सातवीं
श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर

दृढ़ता

श्री कानजी स्वामी ने श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय को त्यागकर जब दिगम्बर धर्म स्वीकार कर लिया। तब उनको लोगों के विरोध का सामना कर पड़ा। लोग उन्हें धमकी देने लगे। परन्तु गुरुदेव अपने निर्णय पर अडिग थे। उन्होंने कहा कि सम्प्रदाय के अथवा पद के लोभ में मैं सत्य मार्ग को नहीं छोड़ सकता। तब किसी ने कहा कि आपको भोजन कौन देगा ? तब गुरुदेव ने कहा– मैंने रोटी के लिये दीक्षा ग्रहण नहीं की थी। मैंने सत्य पाने के लिये दीक्षा ग्रहण की थी। जहाँ सत्य मिलेगा मैं वही जाऊँगा भले ही भोजन मिले या नहीं। गुरुदेव की वज्र जैसी दृढ़ता और सत्य पाने की प्रचंड भावना संसार में दुर्लभ है।

सौरभ जैन शास्त्री, इंदौर

खोजो तो जानें

नीचेलिखे प्रत्येक पंक्ति में दशधर्मों में से एक धर्म (जैसे - सुभग वानर मिन्न थे। उत्तर - भगवान) उसे खोजिये।

1– क्रोध करने वाले को यक्ष मारकर खा गया।

2– साहस, त्याग और समर्पण जीवन को महानता देतीं हैं।

3– इज्जत परिचय से नहीं गुणों से मिलती है।

4– सत्या गल्ती को स्वीकार कर सजा से बच गई।

आपके प्रश्न ? हमारे उत्तर

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

प्रश्न 1. क्या मुनिराज दीक्षा देते समय आर्यिका के केश लोंच कर सकते हैं ?
– राजकुमार जैन, टीकमगढ़

उत्तर. आर्यिका मुनिराज से सात हाथ दूर रहे ऐसी आगम की आज्ञा है। फिर आचार्य आर्यिका के केशलोंच कैसे कर सकते हैं ? आर्यिका ही आर्यिका को दीक्षा देती है, मुनिराज दीक्षा नहीं देते।

प्रश्न–2. भगवान की रथयात्रा में लोग चप्पल–जूते पहनकर चलते हैं क्या यह उचित है ? – सुधीर जैन, अहमदाबाद

उत्तर– जहाँ पर जिनप्रतिमा हो वहाँ पर जिनमंदिर जैसा पवित्र स्थान है। चप्पल–जूते पहनकर चलना महापाप है।

प्रश्न–3. यदि महिलायें भगवान की प्रतिमा को नहीं छूतीं तो इन्द्राणी बालक तीर्थंकर को क्यों छूती हैं? – भागचंद जैन, सतपारा

उत्तर– छोटे बालक को छूना और नवयुवक को गोद में लेना एक जैसा नहीं होता। किसी युवक के साथ बालक जैसा व्यवहार करना अंसभव है। बालक के प्रति स्नेह का तरीका युवकों पर लागू नहीं हो सकता और जब मुनिराज अवस्था में स्त्री को स्पर्श करने का निषेध है सात हाथ दूर से रहने का नियम है तो परम पवित्र तीर्थंकर अवस्था वाले तीर्थंकर की प्रतिमा को स्त्री स्पर्श कैसे कर सकती है ?

प्रश्न–4. प्रतिमा के दर्शन से क्या लाभ हैं ? – पीयूष जैन, मंदसौर

उत्तर– जैसे पिताजी का चित्र देखने से उनके गुण याद आ जाते हैं वैसे ही प्रतिमा को देखने से अपनी आत्मा के गुण याद आ जाते हैं। हमें भी आत्मकल्याण की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न–5. शाकाहार भी पेड़–पौधे से मिलता है और पेड़ भी जीव है तो क्या उसमें हिंसा का पाप नहीं लगता ? – अंकुर जैन, मेरठ

उत्तर– मांस भोजन जैसा भंयकर हिंसा का पाप शाकाहार में नहीं होता क्योंकि शाकाहार में मांस खाने का दोष नहीं है। अपने कषाय परिणाम हों तो हिंसा का पाप लगता है।

गतियाँ

गतियाँ कितनी होती हैं ?
गतियाँ चार होती हैं।
जहाँ नारकी रहते हैं
उसे नरक गति कहते हैं।
पशु जानवर रहते हैं
उसे तिर्यंच गति कहते हैं।
हम सब मानव रहते हैं
उसे मनुष्य गति कहते हैं
देव जहाँ पर रहते हैं
उसे देव गति कहते हैं।
ये गतियाँ कैसे पाते हैं ?
कारण यहाँ बताते हैं।
हिंसा पाप जो करते हैं
प्रभु जाप न करते हैं
दुःखमय जीवन पाते हैं
मायाचारी जो करते हैं
बगुला जैसे रहते हैं
तिर्यंच गति वे पाते हैं।
पशु बन भार उठाते हैं
शान्त परिणाम से रहते हैं
दया धर्म जो करते हैं
मनुष्य गति वे पाते हैं
पांच पाप का त्याग करके
व्रत संयम जो लेते हैं
शुभ परिणाम जो रखते हैं
देव गति को पाते हैं।।

संकलन - संकेत प्रदीप रोकडे, मालेगांव
कक्षा- आठवी, श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर

दशलक्षण दश नाम है, एक धर्म ही जान।
यही धर्म संदेश है, निज स्वरूप पहचान॥

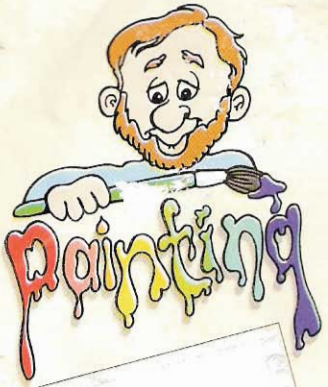

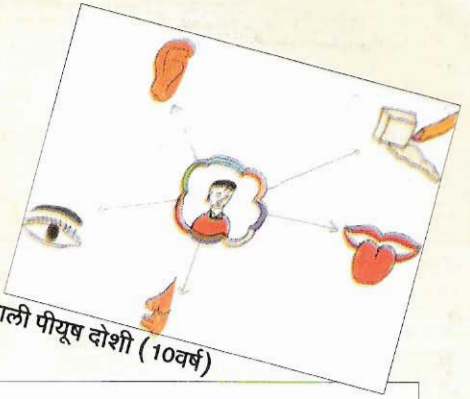

हेमाली पीयूष दोशी (10वर्ष)

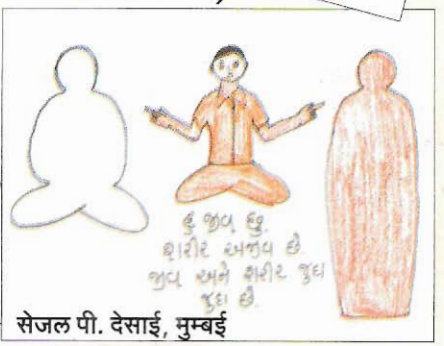

सेजल पी. देसाई, मुम्बई

गौरव अन्नदाते, सावदा
श्री महावीर विद्या निकेतन
नागपुर

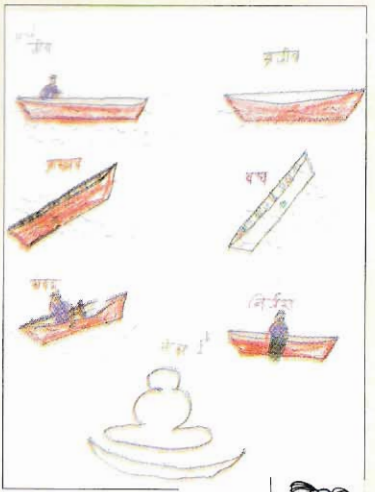

डिम्पी शाह
(6 वर्ष)

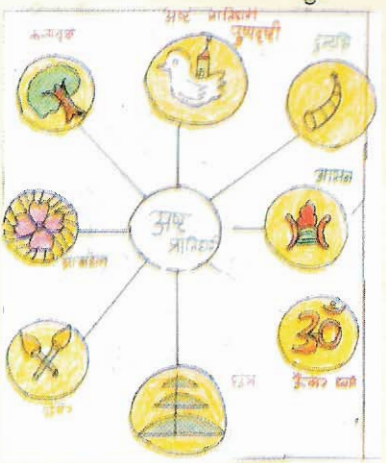

चार्मी एच.शाह, गुज.(12 वर्ष)

चक्कर

इससे पूर्व आपने पढा के एक लंगोटधारी साधु की लंगोट चूहे खा जाते थे। चूहों से बचने के लिये मित्र की सलाह पर बिल्ली पाल ली। फिर बिल्ली के दूध के लिये गाय पाल ली। अब आगे –

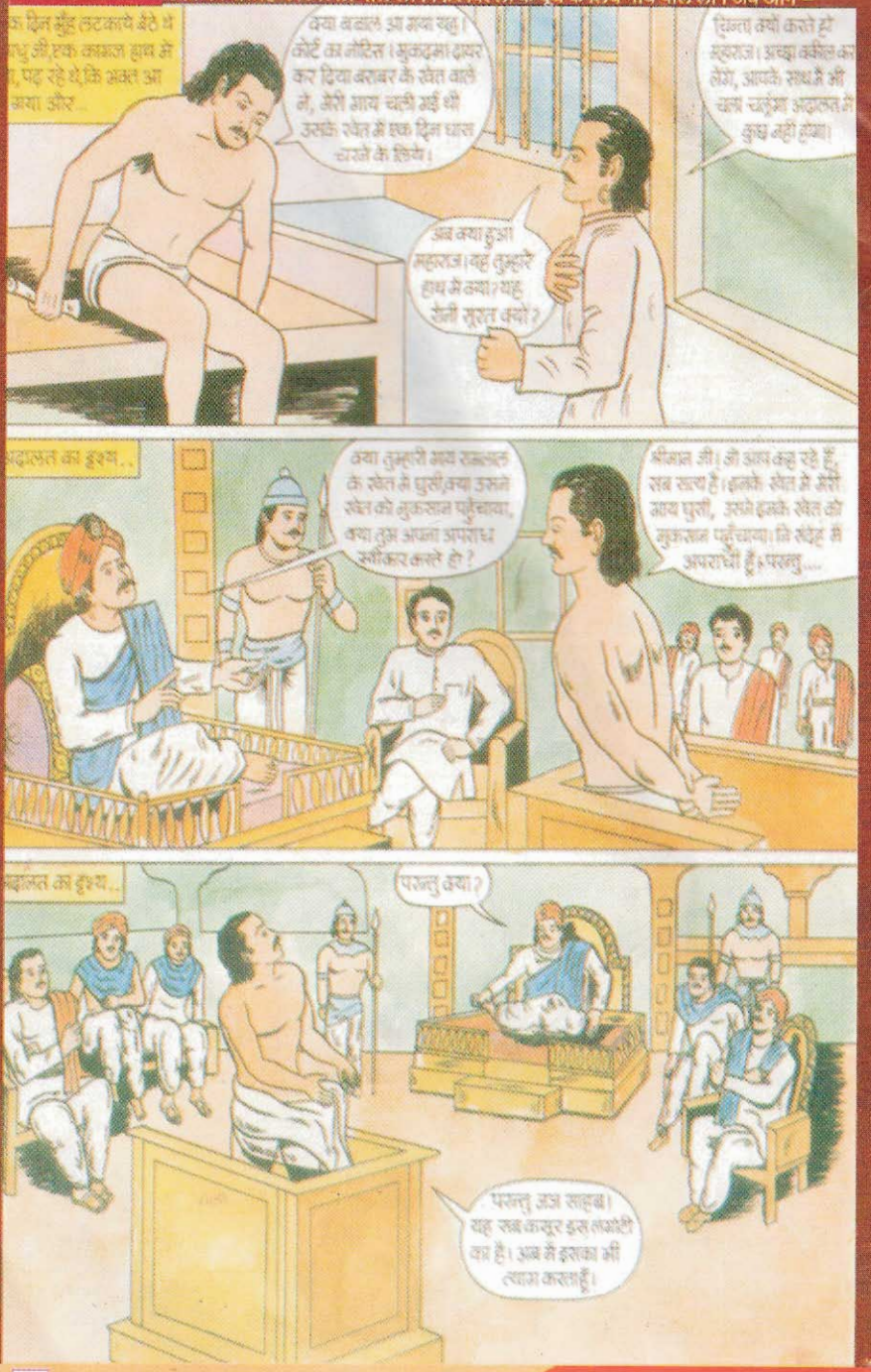

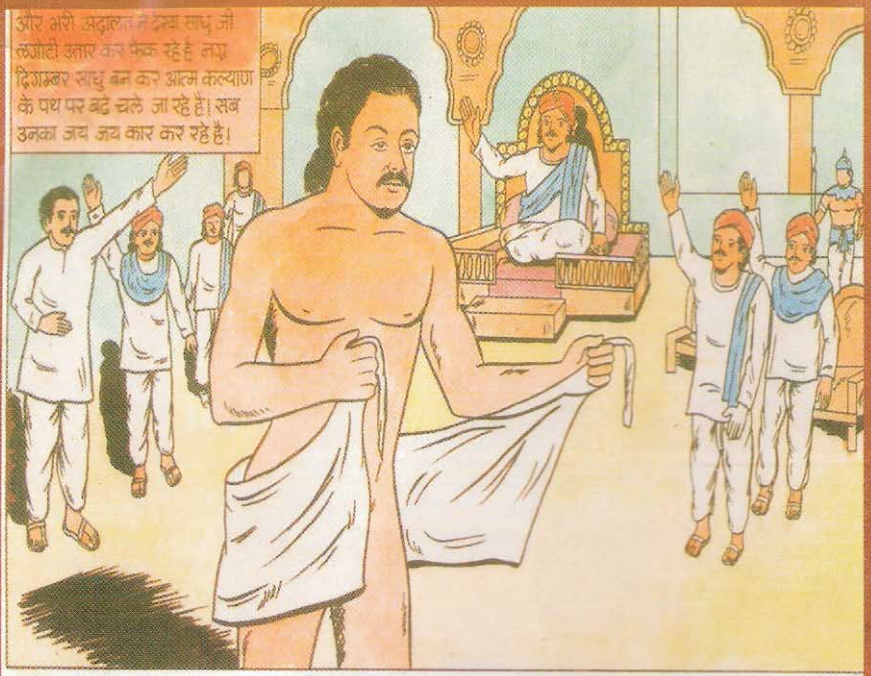

और भरी अदालत में देखा साधु जी
लंगोटी उतार कर फेंक रहे हैं नग्न
दिगम्बर साधु बन कर आत्म कल्याण
के पथ पर बढ़े चले जा रहे हैं। सब
उनका जय जय कार कर रहे हैं।

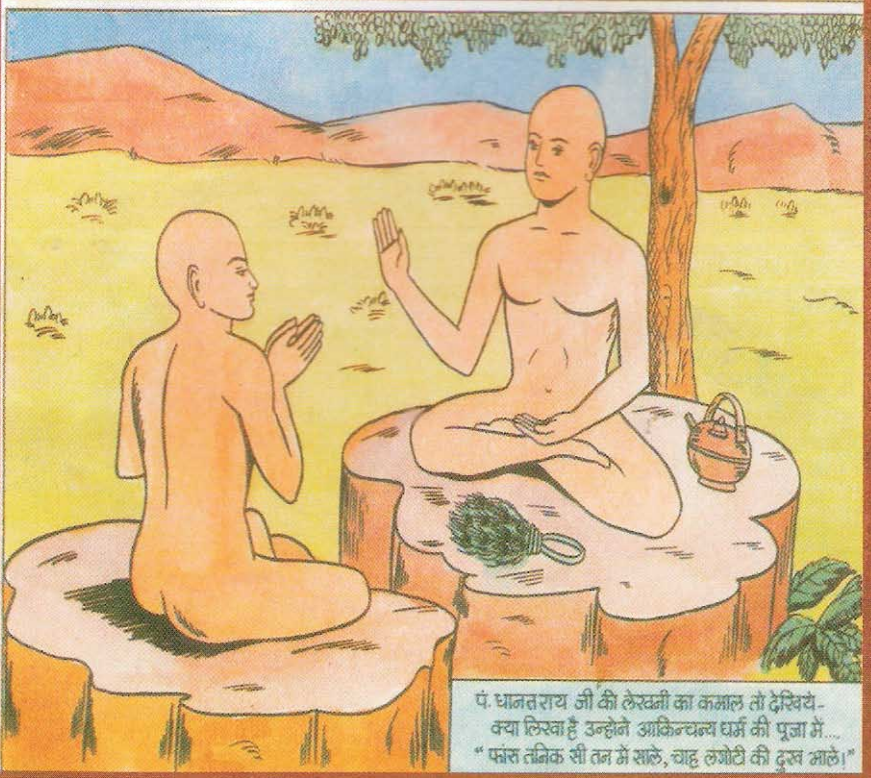

पं. धानतराय जी की लेखनी का कमाल तो देखिये-
क्या लिखा है उन्होने आकिन्चन्य धर्म की पूजा में....
" फांस तनिक सी तन में साले, चाह लगोटी की दुख भाले।"